हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ

हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ॥

चहुँ दिस में कहुँ ठौर नाही मोहें ,
मोरे पीछे पीछे , आवत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ ॥

मेरो मन मोदिर में ऐसो बसो है ,
मोहे हर पल लुभावत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ,

त्रिभुवन में नाही कोऊ है ऐसो ,
जैसो तीर चलावत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ ॥

भवसागर में भटक रहा हूँ ,
काहे नाही , पार लगावत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ ॥

भजन रचना: ज्योति नारायण पाठक
वाराणसी
(मोब: ०९५९८०५०५५१)

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/2392/title/hey-kanha-mohe-bahut-satawat-tori-akhiya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |